द ग्रेट ऑक पंछी का अंत

दिगंबर गाडगिल

2 जून, 1844 को एल्डी नामक द्वीप पर तीन शिकारी उतरे। उनमें से एक, जॉन, को ग्रेट ऑक पंछी दिखाई पड़ा। अपने दोनों हाथ फैलाकर जॉन उस पर झपटा। वह दुबला पंछी भाग जाने की कोशिश में ही जॉन के हाथ लग गया, और एक क्षण में जॉन ने उसकी गर्दन मरोड़ दी। उसके अन्य दो साथी सिगुर्डर और केटिल को भी एक ग्रेट ऑक दिखाई पड़ा। सिगुर्डर ने उसको पकड़ा, लेकिन उसकी गर्दन मरोड़ देने का काम केटिल ने किया।

कैंब्रिज के एक प्राणी शास्त्री अल्फ्रेड न्यूटन ने इस घटना का वर्णन लिखा है। सन 1858 में न्यूटन ऑक पंछी की खोज में आईसलैण्ड द्वीप पर गए थे, जहां उनको ये तीन शिकारी मिले। बातचीत के दौरान उन्हें इस घटना का पता चला। उन शिकारियों को यह मालूम नहीं था कि उन्होंने जिन दो ऑक पंछियों को मार डाला था वे उस प्रजाति के अंतिम जीव थे। इतिहास में अनेक प्रजातियों के विनाश का ज़िक्र मिलता है लेकिन जैसे ग्रेट ऑक के सफाए की निश्चित तिथि बताई जा सकती है, वैसे किसी अन्य प्रजाति की नहीं।

19वीं सदी के आंरभ से ही ऑक की संख्या कम होने लगी थी। इस पंछी को गेअर फाउल नाम से पहचाना जाता था। जैसे-जैसे उनकी संख्या घटने लगी, वैसे-वैसे उनका मूल्य भी बढ़ने लगा। इसीलिए साहसी प्रवासी इस पंछी के अंडे या चमड़ी पाने के लिए ऐसे द्वीपों पर जाया करते थे जो इसका मूल स्थान माने जाते हैं। उन तीन शिकारियों ने ऑक की चमड़ी किसी व्यापारी को बेच डाली थी। लेकिन पंछी के आंतरिक अंग स्पिरिट में सुरक्षित रखे हुए हैं और आज भी कोपनहेगन प्राणी संग्रहालय में देखे जा सकते हैं।

किसी समय ऑक पंछी फ्लोरिडा से लेब्रडोर तक के प्रदेश और नार्वे की उत्तर दिशा में लाखों की तादाद में पाए जाते थे। उनको उत्तर का पेंग्विन ही कहा जाता था। करीब 60 से.मी. ऊंचाई और 5 किलोग्राम वज़न का ऑक उड़ने में असमर्थ था; उसके छोटे-छोटे पंख सिर्फ तैरने के लिए ही उपयुक्त थे।

19वीं सदी में कई मछुआरे न्यू फाउंडलैंड के समुद्र में मछली पकड़ने जाते थे। उस समय फंक द्वीप पर इतनी बड़ी संख्या में समुद्री पक्षी रहते थे कि उनकी गिनती करना भी असंभव था। इनका शिकार करना एक अच्छा-खासा व्यवसाय ही बन गया था। बताते हैं कि इस ऑक का मांस बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता था।

आगे चलकर ऑक का शिकार उसके परों के लिए होने लगा। परों से गद्दियां बनती थीं। खलासी डंडे से इन पंछियों का शिकार करते थे। मरे हुए पंछियों के पर खींचकर निकालते थे। या उबलते पानी में रखने से सारे पर आप ही आप निकल आते थे। द्वीप पर लकड़ी न होने के कारण ईंधन के लिए पंछी के शरीर का उपयोग किया जाता था।

18वीं सदी में परों की मांग इतनी बढ़ गई थी कि कई व्यापारी पंछियों की पैदाइश के मौसम में फंक द्वीप पर ही रहने लगे। 0.2 वर्ग कि.मी. क्षेत्र के इस छोटे-से द्वीप पर हज़ारों-लाखों की तादाद में प्रजनन के लिए पंछी आते थे। किसी संकट की कल्पना भी उनको नहीं थी। लेब्रडोर द्वीप पर बसने वाला पहला प्रवासी के. जॉर्ज कार्टराईट था। जुलाई 1785 में न्यू फाउंडलैंड के किनारे पर फंक द्वीप से कई नावों में भरकर ऑक को लाया जा रहा था। कै. कार्टराईट ने चेतावनी दी थी कि अगर इन पंछियों का इस तरह से शिकार करना रोका नहीं गया, तो उनका अस्तित्व समाप्त होते देर नहीं लगेगी। केवल 15 वर्षों में ही के.

कार्टराईट का कथन सत्य हुआ। सन 1800 में फंक द्वीप पर एक भी ऑक नहीं रहा। बड़ी मात्रा में केवल उनके अस्थि-अवशेष ही बिखरे हुए थे। सन 1887 में लूकस नामक एक वैज्ञानिक फंक द्वीप से पंछियों की हड्डियां संग्रहालय के लिए ले आए। ऑक का अस्तित्व समाप्त होने पर अब उसके अवशेषों की मांग बढ़ने लगी। बर्फ में बहुत ही नीचे कुछ कंकाल अच्छी स्थिति में मिले। 1893 में ये कंकाल रिचर्ड ओवेन, जो डार्विन का प्रतिस्पर्धी था, के हाथ आए। उन्होंने ऑक के बारे में सम्पूर्ण जानकारी लिखी है।

फंक द्वीप पर ऑक की संख्या घटने से पूर्व ही मादा ऑक ने अंडे देना बंद कर दिया था। इसके कारणों की खोज नहीं की गई है। यह भी आश्चर्य की बात है कि जहां ऑक के बारे में बहुत सारी जानकारी कई जगहों पर मिलती है वहीं उसके बच्चों के बारे में किसी प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता। वैसे एक डैनिश प्रकृतिविद ऑटो फैब्रिश्यस ने 18वीं सदी के उत्तरार्ध में ग्रीनलैंड द्वीप के आसपास अगस्त महीने में समुद्र में तैरने वाले ऑक के कुछ बच्चों को देखने का उल्लेख किया है। बच्चों के आहार को जानने के लिए उन्होंने कुछ बच्चों को मार कर उनका पेट फाड़कर देखा था। लेकिन वापस लौटते समय वह अपने साथ एक भी कंकाल न ला सके। सिमिंग्टन ग्रीव्ह ने ऑक सम्बंधी अपनी पुस्तक में कहा है कि शायद ऑटो फैब्रिश्यस ने ऑक के बच्चे पहचानने में ही गलती की थी।

उड़ने में असमर्थ होने के कारण ऑक का शिकार बहुत ही आसान था। इसीलिए उसकी हत्या होती रही। जब कोई चीज़ दुर्लभ होने लगती है तो उसे पाने की मनुष्य की तीव्र लालसा उस चीज़ का अस्तित्व ही मिटा देने का कारण बन जाती है। इस संदर्भ में डोडो पक्षी की याद आना स्वाभाविक है। डोडो भी उड़ नहीं सकता था।

ऑक के बारे में वैसा ही हुआ। ऑक के दुर्लभ होते जाने की खबर लगते ही उनके निजी संग्राहकों और जंतु संग्रहालयों ने उसे हर तरह से पाने के प्रयास शुरू किए। परिणामतः एक ओर उसकी कीमत बढ़ने लगी और दूसरी ओर उसकी तादाद कम होने लगी। अंत में 3 जून 1844 को अंतिम ऑक के शिकार के साथ लाखों की तादाद में पाया जाने वाला एक सुंदर पंछी पृथ्वी से हमेशा के लिए मिट गया। अब इस घटना को 150 से भी अधिक वर्ष बीत चुके है। *(स्रोत फीचर्स)*

अगले अंक में

स्रोत नवम्बर 2003
अंक 180

- कांच को तराशने पर हीरे की चमक क्यों नहीं आती?
- इन्तहापसंद जीव-जंतु
- भारत में मीठा पानी - संभावनाएं और समस्याएं
- ग्लायडिंग का आनंद
- क्या होती है नैनो-टेक्नॉलॉजी